Dainik Bhaskar Date: 11.03.2018

जूट-रेशम टेक्सटाइल के क्षेत्र में हैं बहुत संभावनाएं

टेक्सकॉन 2018 में शामिल हुए टेक्सटाइल इंजीनियरिंग के एक्सपर्ट, टेक्निकल कॉन्सेप्ट पर की बात

Conference

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

समय के साथ टेक्सटाइल इंडस्ट्री में अवसर भी बढ़ रहे हैं। इनोवेशन के युग में यह जरूरी है कि हम नई टेक्नोलॉजी से परिचित रहें और लगातार सीखने की कोशिश करें। टेक्सटाइल इंडस्ट्री में आयुर्वेद वस्त्र, जूट और रेशम के क्षेत्र में बहुत संभावनाएं हैं। यह कहना था आईएएस ऑफिसर और एमपीएफसी की मैनेजिंग डायरेक्टर स्मिता भारद्वाज का। वे बतौर मुख्य अतिथि वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में आयोजित टेक्सटाइल कॉन्फ्रेंस टेक्सकॉन 2018 में शामिल हुईं। उन्होंने कहा कि भारत में करीब 4 फीसदी जीडीपी और 14 प्रतिशत एक्सपोर्ट में टेक्सटाइल उद्योग का योगदान है। इसलिए इस क्षेत्र में नए-नए प्रयोग करते रहना जरूरी है।

कार्यक्रम में एक्सपर्ट्स ने टेक्सटाइल इंडस्ट्री में संभावनाओं पर अपनी बात रखी।

टेक्सटाइल इंजीनियरिंग में नए अवसर तलाश

टेक्सकॉन-2018 के चेयरमैन टी. के. सिन्हा ने कहा कि इस दो दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस में टेक्सटाइल इंजीनियरिंग फैशन, टेक्सटाइल मैनेजमेंट और कपड़ा विज्ञान पर चर्चा की जाएगी। कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने कहा कि टेक्नोलॉजी ने कई चीजों को आसान कर दिया है। टेक्सटाइल इंडस्ट्री में कई तरह के बदलावों का दौर है। कॉन्फ्रेंस में हम फैशन टेक्नोलॉजी और टेक्सटाइल इंजीनियरिंग में उन्नति के नए अवसर तलाश कर सकेंगे। एक्सपर्ट डॉ. सुब्रत घोष, डॉ. स्वप्निल घोष, डॉ. प्रबीर जाना, डॉ. आशीष कुमार, डॉ. मिलिंद कोरान्ने, डॉ. आर पी गौतम ने टेक्निकल कॉन्सेप्ट पर बात की।

आप नौकरी करने नहीं, नौकरी देने वालों में से हैं

कॉन्फ्रेंस में शनिवार को बतौर अतिथि जगदीश वर्मा ने कहा कि आज मेरे सामने टाटा, अंबानी, इंद्रा नुयी बैठे नजर आ रहे हैं। यह इसलिए कि आप नौकरी करने वालों में से नहीं, नौकरी देने वालों में से हैं। यहां से निकलकर आप नौकरी देने के बारे में सोचेंगे। बिजनेस करने के लिए स्वयं पर विश्वास, मेहनत, अनुशासन और समर्पण रखना चाहिए। इसके लिए तमाम जानकारियों के बारे में जानना जरूरी है।